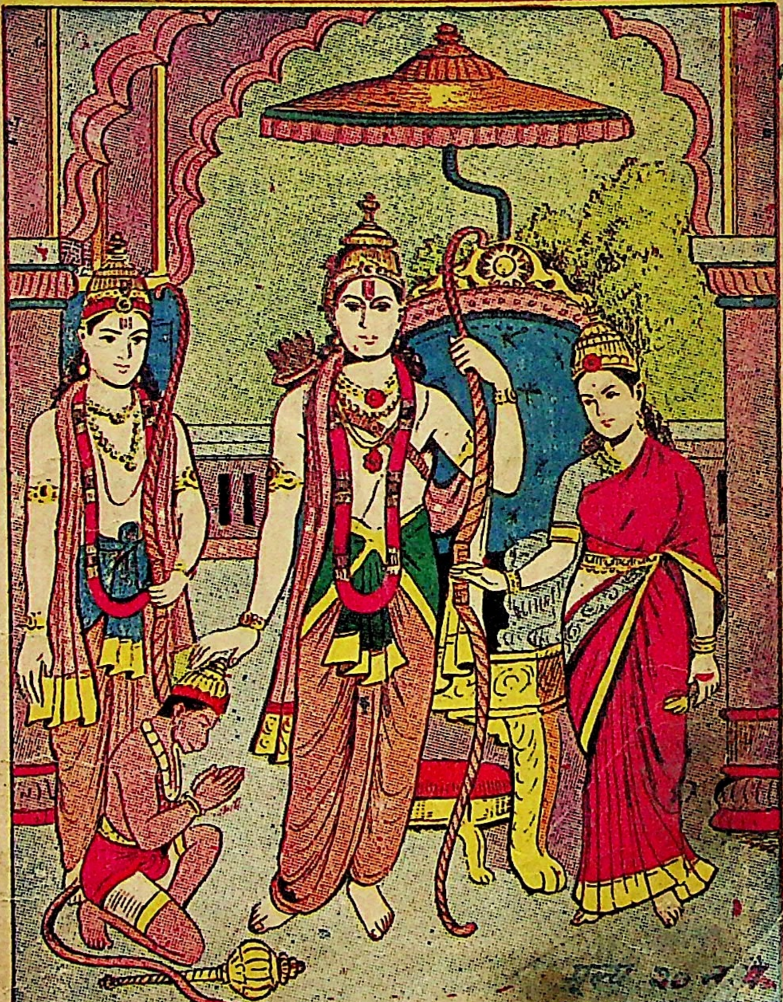
आरती संग्रह



आनन्द प्रकाशन खारी बावली देहली

मुल्य २५ पैसे

आरती संग्रह

ओं जै जगदीश हरे स्वामी जै जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे ।ओ३म।
जो ध्यावे फल पावे दुःख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तनका ।ओ३म ।
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा आस करू किसकी ।ओ३म
तुम हो पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ।ओ३म ।
तुम करुणा के सागर तुम पालन करता ।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ।ओ३म ।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पति ।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती ।ओ३म्
दीन बन्धु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे ।
करुणा हस्त बढ़ाओ द्वार पड़ा तेरे ।ओ३म् ।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ।
ओ३म् जय जगदीश हरे !

।। आरती श्रीकृष्णचन्द्र जी की ।।

आरती युगल किशोर की कीजै । राधे तन मन धन

न्यौछावर कीजै । टेक । रवि शशि कोटिक बदन की शोभा ताहि निरख मेरो मन लोभा० । १ । गौर श्याम मुख निर्खत रीझै । प्रभु को स्वरूप नयन भर पीजै० । २ । कंचन थार कपूर की बाती । हरि आये निर्मल भई छाती । आ० ३ । फूलन की सेज फूलन को माला । रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला । आ० ४ । मोर मुकुट कर मुरली सोहै । नटवर वेश देखिर मन मोहै । आ० ५ । ओढ्यो नील पीत पटसारी कुंजबिहारी गिरवरधारी । आ० ६ । श्री पुरुषोत्तम गिरवरधारी । आरती करत सकल ब्रजनारी । आ० ७ । नन्दनन्दन वृषभानु किशोर । परमानन्द स्वामी अविचल जोड़ी । आरती युगल किशोर की कीजै ।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओं३म जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता तुमको निशदिन सेवत हरिविष्णु धाता । उमा रमा ब्रह्माणी तुमही जगतमाता । सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता । जय० । १ । दुर्गा रूप निरंजनि सुख सम्पति दाता । जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि धन पाता । २ तुम

पाताल निवासिनी तुमही शुभदाता । कर्मप्रभाव प्रकाशिनि जग निधि की त्राता । जय० जिस घर थारो वासा जेहिमें गुण आता । कर न सके सोई करले मन नहिं घबड़ाता । जय० ४ । तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होता रादा खान पान का वैभव तुम बिन को दाता । जय० । ५ शुभ गुण मन्दिर सुन्दर त्रोदधि जाता । रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नर गाता । उर आनन्द समाता पाप उतर जाता । जय । ७

जिधर चरण तब पहुंचे नरशुभहो जाता । रामप्रताप माता की शुभ दृष्टि चाहता जय लक्ष्मी माता जैय लक्ष्मी माता तुमको निशदिन सेवत । जय० । ८

श्री पार्वती देवी की आरती

जय पार्वती माता जय पार्वती माता । ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता टेक अरिकुल पद्म बिनासनि जय सेवक त्राता । जग जीवन जगदम्बा हरि गुण गाता १ सिंह को बाहन साजे कुण्डल है साथा । देव बधू जग गावत नृत्य करता नाथा । जय० २ सतयुग रूपशील अति सुन्दर नाम सती कहलाता हे मचल घर जन्न सखिन संगराता । जय० ० शुम्भ निशुम्भ विदारे हेमाँचल स्थान

सहस्त्र भुजतनु धारिके चक्र लियों हाथा । जय० ४ सृष्टि रूप तुही है जननी शिवसग रगराता । नन्दी भृगी बीन-लहो सारा मदमाता । जय० ५ । देवन अरज करत हम चित को लाता । गावत दे दे ताली मन में रग माता । जय० ६ श्री प्रताप आरती मैया की जो कोई गाता सदा सुखी नित रहता सुख सम्पत्तिपाता। जय०७

॥ आरती श्री तुलसी जी की ॥

जय तुलसी माता जय तुलसी माता। सब जग सुख की दाता वर दाता। जय० सब योगों के ऊपर सब रोगों के ऊपर। रुज से रचा करके भव त्राता जय० बहु पत्री हे श्याम, शर वल्ली हे ग्राम्या। विष्णु प्रिय जो तुमको सेवे सो तर जाता। जय हरि के शीश विरा जत त्रिभुवन से हो वन्दित। पतित जनों की तारणी, तुम हो विख्याता। जय० लेकर जन्म विजन में आई दीव्य भवन में। मानव लोक तुम्ही से सुख सम्पति पाता जय हरि को तुम अति प्यारी श्याम वरण सुकुमारी प्रेम अजब है उनका तुमसे कैसा नाता ।जय०।

॥ आरती श्री बद्रीनारायण जी की ॥

पवन मन्द सुगन्द शीतल हेम मन्दिर शोभितम निकट गंगा बहत निर्मल श्री बद्रीनाथ विश्वम्भर शेष सुमिरन करत निशिदिन धरत ध्यान महेश्वरम श्री बेद ब्रह्मा करत स्तुति श्री बद्री० ।

शक्ति गौरी गणेश शारदनारद मुनिजन उच्चारणम जो ध्यान अपार लीला श्री बद्रीनाथ विश्वम्भर इन्द्र चन्द कुबेरे धुन करें धूप दीप प्रकाशितम सिद्धी मुनिजन करत जै जै बद्रीनाथ विश्वम्भरम । दत्त के भरत नल कौतुक ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम । श्री लक्ष्मी कमला चमर ढोरें श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम । कैलाश में एक देव निरंजन शैल शिखर महेश्वरम । श्री राजा युधिष्ठर करत स्तुति श्री बद्री नाथ० । श्री बद्रीनाथ के पंचरत्न पढ़त पाप विनाशनम । कोटि तीर्थ भवेत पुन्यं प्राप्यते फलदायकम ।

श्री सत्यनारायणजी की आरती

जय लक्ष्मी रमणा जय श्री लक्ष्मी रमणा सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा । जय० । टेक रत्न जड़ित

सिंहासन अद्भुत छवि राजै । नारद करत निरञ्जन घण्टा ध्वनि बाजै । जय० । १ प्रकट भये कलिकारण द्विज को दर्श दियो । बूढ़ा ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो । ॥ जय० ॥ २ दुर्बल भील कठोरा जिन पर कृपा करी चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत हरी । जय० ३ । वैश्क मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीन्ही । सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी । जय० भक्ति के । कारण छिन छिन रूप धरयो श्रद्धा धारण कीनी तिनको काज सरयो । जय० ५ ग्वालबाल संगराजा बनमें भक्ति करी मन वांछित फल दीन्हों दीनदयाल हरी । जय० ६ चढ़त प्रशाद सवायो कदली फल मेवा धूप दीप तुलसी से राजी सत्य देवा जय० ७ श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावे तन मन सुख सम्पति मन वांछित फल पावे जय०

गीता जी की आरती

करो आरती श्री गीता जी की जग की तारन त्रिवेनी स्वर्ग धाम की सुगम निसेनेः अपरम्पार शक्ति की देनी जय हो सदा पुनीता की करो० ज्ञान दीप की दिव्य जोतिमा सकल

श्री गंगा जी की आरती

ओं जय गंगे माता जी की जय गंगे माता जी नर तुमको ध्याता जो नर तुमको ध्याता मन वांछित फल पाता ओं जय गंगे माता। १। चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी जल निर्मल आता। शरण पड़े जो तेरी २ सो नर तर जाता। ओं जय गंगे माता। २। पुत्र सागर के तारे सब जग की ज्ञाता। कृपा दृष्टि तुम्हारी त्रिभूवन सुखदाता। ओं जय गंगे माता ॥ ३ ॥ एक हीमार जो तेरी शरणागति आता। यम की त्रास मिटार यम की त्रास मिटाकर पर गति पाता। ओं गंगे माता। ४। आरती मात तुम्हारी जो जन नित गाता दास वही सहज में मुक्ति पाता। ओं जय गंगे माता। ५।

आरती रामचन्द्र जी की

आरती कीजे रामचन्द्र जी की हरि हरि दुष्ट दलन की सीतापति की पहली आरती पुष्पन की माला काली नाग नाथ लाए गोपाला दूसरी आरती देवकी नन्दन भक्त उबारन

कंस निकन्दन तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे
रत्नसिंहासन सीता राम जी सोहे चौथी आरती
चहुँयुग पूजा देव निरन्जन स्वामी और न दूजा
पांचवी आरती राम को भावे का यश
राम देव गावै ।

आरती श्री राधिका नाथ की

आरती करत राधिका नागरी ।
तन कनक थार भूषन रत्नदीप किये ।
कमल शुक्लवली मंगल उजागरी ।
रुचित कोटि मेखला सुभग घंटावाली ।
झालर शंख बाजत जै करत उच्चागरी ।
अनुराग छत्र अंचल चमा नयन चल ।
भाव कुसुमांजली चतुर मुन आगरी ।
सखी जूथन लिए विविध भोजन किये ।
सुखद गिरवर धरन रिझावत सुहागरी ।
जयति विस्नु स्वामी पथ पावन श्री बल्लभपद ।
पद्म बरनत कृष्ण दास बड़भागरी ।

आरती श्री जगदीश जी की

आरती श्री जगन्नाथ मंगलकारी । निरखत मुखारविंद रविंद आपदाहारी निरखत मुखारविंद आप

द्वाहरी । कंचन मन धूप ध्यान ज्योति जगमगी । अग्नि मण्डल धृतपान सारथी । आरती० । १ इन्द्र नभत द्वारे ठाड़े रोहिणी खड़ी । मार्तण्डेश्वर गंगे आन के भरी आरती० । २ गरुण सिंह पौर यात्रा जुडी । यात्रा के भीड़ बहुत बेन की छुडी आरती० । ३ सुर नर मुनि द्वारे ठाड़े ब्रह्मा बेद उचारी धन्य-धन्य सूर श्याम आज की घरी आरती० ४ ।

आरती श्री भैरव जी की

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा । जय काली और गौरा कृत देवी सेवा । तुम्हीं आप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक, भक्तों के सुख कारण भीषण वपु धारक वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी महिमा अमित तुम्हारी जय जय भय हारी तुम बिना देव सफल नहीं होवे चतुर्वर्तिक दीपक दर्शन दुःख खोवे तेल चटक दधि मिश्रित माषवली तेरी । कृपा करिये भैरव करिये नाहि देरी पाँव घूंघरू बाजत डमरू डमकावत बटुकटनाथ बन बालक जन मन हर्षावत । बटुकनाथ की आरती जो कोई गावे । कहे धरणीधर वह नर वाँछित फल पावे ।

आरती लछमण बाला जी की

जय बोलो लछमण बाला जी की। बाला की वो नन्द लाला की। टेर दक्षिण देश सवा लक्ष पर्वत। जगमग ज्योति दिवाला की। जय० १ त्रिपदी में सीता रामजी विराजें। चौकी हनुमत बाला की। जय० २। शेषाचल पर आ विराजी। चौकी हनुमत बाला की। जय०। ३ जय विजय दोउ पैरिया विराजें। गरीधूम नगारा की। जय०। ४ बाला जी की के रथ कनक सिंहासन कलंगी बनी हीरालाल की। जय० ५ बृहस्पतिवार जरीको जामो। ऊपर मौज दुशाला की। जय०। ६ शुक्रवार दूध को न्हावण। मौजबनी मोहनमाला की। जय०। ७ देश देश के यात्री आवैं। मार पड़े भृगछामा की। जय० ८ आश नन्द गरीब तुम्हारी। पति राखो जी कंठीवाला की। ९ जय बोलो सांची लछमण बाला की बाला की नन्दलाला की। हरिद्वार दशरथ सत नन्दलाला की। वो हरिहर दशरथ परदेशां रखवाली हरिहर घाट बाट रख बाला की जय० १०।

—:०:—

॥ नर्मदा जी की आरती ॥

जै जै जगदम्बा जै नर्मदा भवानी ।
निकासी जल धार, पर्वत पाताल फोर,
दुष्ट गंज गर्भ तोर प्रगटो महारानी ।
घाट-घाट छवि आनन्द, बरनत कवि सुन फनिंद्र,
काटत जय दंड, फंद, देत राजधानी ।
भूषण वस्त्र शुभ विशाल, चन्दन की खौर भाल
मानो रवि प्रातःकाल तेज औ बखानो ।
देत मुक्ति परम धाम गावत जो आठो जाम,
दुबिधा तज मोह काम ध्यावत जो प्राणी । १
ध्यावत अज सुर सुरश, पावन नहीं, पार शेष,
गावत नारद गणेश, पण्डित मुनि ज्ञानी ।
सगम सागर मझार, मणिज उदधि अहंकार.
उदर फार, निकार धार ऊपर छहरानो ।
अष्ट भुजा अखण्ड बाहम बल अति प्रचण्ड,
सप्त दीप नौ खण्ड, महिमा तुम जानी ।
दे के दरशन प्रशाद राखो मर्यादा,
दास गङ्ग करत याद, वेद मति बखानी २ ।

—०—

शिव जी की आरती

शीश गंग आर्धांग पार्वती सदा विराजत कैलाशी नंदी भृंगी नृत्य करत हैं गुनि भक्त शिवाजी दासी शीतल मंद पवन वहै बैठे हैं शिव अविनाशी करें गान गंधर्व सप्त-सुर रागनी मांसी यज्ञ भैरव जहं डोलत बोलत हैं वनके वासी कोयल जहाँ शब्द सुनावत सुंदर भ्रमर करत हैं गुंजासी

कल्पद्रु म अरु परिजाततरु लागत जहाँ लचयासी कामधेनु कोटिन जहाँ डोलत फिरत है भिचासी।

सूर्यकाँति समपर्वत शोभित चन्द्रकाँति भवमी वासी छओ ऋतु निति फलत रहत पुष्प चढ़त है वर्षा सी देवमुनिजन की भीड़ पड़त है निगम रहत जो नित वासी ब्रह्मा विष्णु जाको ध्यान धरत हैं कुछ शिव हमको फरमासी रिद्धि सिद्धि के दाता शंकर सदा अनंदित सुख रासी जिनके सुमिरण सेवा करें ते टूटजाय यम की फाँसी त्रिशूल धरजी को ध्यान निरन्तर मन लगाय कर जो ध्यासी दूर करे बिपदा शिव उनकी जन २ शिव पद पासी।
कैलाशी काशी के वासी अविनाशी मेरी सुधि लीज्यो।
सेवक जो सदा चारणन को अपनी जान जश दीज्यो।
तुम तो प्रभु जी सदा सयाने हो औगुण मेरे सब ढकियो
सब अपराध छमाकर शंकर किंकर की विनती सुनियो।

सत्य प्रिंटिंग प्रेस, २, शिवनगर, करोल बाग, नई दिल्ली—५